माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय (3)

2019

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी विशिष्ट	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र.

219-

5891958

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

X	1	9	2	4	5	0	6	0	3

शब्दों में

X	एक	नौ	दो	चार	पाँच	शून्य	छः	शून्य	तीन

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ 1 1 ... 4 3 9 5 ...

भोपाल

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 01 शब्दों में एक

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 24

ग :– परीक्षा का दिनांक 19 03 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक 21101 H. S. 2019

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Smt. Suman Lata Rajak	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नही पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के ... निर्धारित मुद्रा
M. P ...ya 9770501	N.K. ...KAR E/7

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	(अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

2 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र. (1) - उत्तर)

1) कृष्ण के

2) शहद

3) प्रवाजिका आत्मप्राणा

4) कृतज्ञ

5) रति

(प्रश्न क्र. (2) - उत्तर)

1) गाँवों में

2) महादेवी वर्मा

3) माद्री

4) सोलह

5) पंचवटी

3 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 3 के अंक   कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र. (3) - उत्तर)

1) सत्य

2) सत्य

3) असत्य

4) असत्य

5) असत्य

B S E

(प्रश्न क्र. (4) - उत्तर)

'अ'	'ब' सही जोड़ी
1) पथ की पहचान	- हरिवंशराय बच्चन
2) श्रीकृष्ण	- सोलह कलाओं के अवतार
3) नर्मदा	- अमरकण्टक
4) संधि को तोड़ना	- विच्छेद
5) संचारी भावों की संख्या	- 33

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र (5) - उत्तर)

1) जाति

2) साम्भाजी

3) मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल

4) अद्वितीय

5) वियोग श्रृंगार रस

(प्रश्न (6) - उत्तर)

अवगुणों पर ध्यान न देने के लिए, कवि सूरदास जी ईश्वर से प्रार्थना करते है।

(प्रश्न (7) - उत्तर)

भ्रामरी उस व्यक्ति का अभिनंदन करती है, जो इन्द्र के वज्र का आघात सह सकता है एवं जिसके सर पर असिघात रक्त चंदन सुशोभित है।

प्रश्न क्र.

(प्रश्न - (8) - उत्तर) (अथवा)

कवितावली के अनुसार, तुलसीदास जी के मन मंदिर में सदैव राजा दशरथ के चारों पुत्र, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न विहार करते हैं।

(प्रश्न (9) - उत्तर) (अथवा)

बिना विचारे काम करने से व्यक्ति को आगे जाकर पछताना पड़ता है। इसलिए व्यक्ति को सभी कार्य योजनानुसार करना चाहिए।

(प्रश्न (10) - उत्तर) (अथवा)

कबीर ईश्वर से कहते हैं, कि हे ईश्वर! मुझे इतना ही धन दीजिए, जिसमें मेरे परिवार का पालन पोषण अच्छी तरह से हो सके। और घर में आयो हुआ साधु कभी भूखा न जाए।

(प्रश्न (11) - उत्तर)

हिन्दी की प्रथम कहानी - "इन्दुमति"

कहानीकार - "किशोरीलाल गोस्वामी जी"

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

(प्रश्न (12) - उत्तर)

लाला लाजपतराय के चरित्र की विशेषताएँ -
(1) उनकी कलम, जो आग उगलती थी, अर्थात् उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध अनेक लेखों का सम्पादन किया।
(2) उनकी वाणी, जो क्रांति उत्पन्न कर देती थी।

(प्रश्न (13) - उत्तर)

पुरुषोत्तम कहते हैं कि, "यदि धर्म की रक्षा के लिए असत्य का सहारा लिया जाए तो वह सत्य से भी बड़ा होता है।"
धर्म की रक्षा के लिए बोला गया असत्य सत्य से भी बड़ा होता है।

(प्रश्न (14) - उत्तर) (अथवा)

युधिष्ठिर ने कहा, " रोज कितने ही प्राणियों को मृत्यु के मुख में जाते हुए देखकर भी, बचे हुए प्राणी यह चाहते हैं कि हम अमर रहें," यह सबसे महान आश्चर्य की बात है।

प्रश्न क्र.

(प्रश्न (15)- उत्तर)

(i) तुम अपना कार्य करो।

(ii) अरे! सीता गाना गाती है!

(प्रश्न (16)- उत्तर)

खण्डकाव्य - "खण्डकाव्य में किसी व्यक्ति या महापुरुष के जीवन की किसी एक घटना का चित्रण (वर्णन) होता है।"
इसमें एक या दो सर्ग होते हैं एवं संपूर्ण रचना एक ही छंद में पूर्ण होती है।

खंडकाव्य के नाम - सुदामा चरित्र, जयद्रथ वध आदि।

(प्रश्न (17)- उत्तर)

वनवास की कठिनाइयों का सामना करते हुए भी अर्जुन ने इंद्रदेव से भेंट करके दिव्यास्त्र प्राप्त कर लिया, भीम ने सुंदर फूलों वाले बगीचे में हनुमान जी आलिंगन प्राप्त कर लिया एवं महाशक्तिशाली हो गया तथा युधिष्ठिर ने स्वयं धर्मदेव के दर्शन किए एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।
इस प्रकार कठिनाइयों के साथ भी पाण्डवों ने अपना वनवास एवं अज्ञातवास पूर्ण किया।

B
S
E

8 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 8 के अंक | योग कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र. (18) - उत्तर) (अथवा)

(i) जिसका कोई आकार न हो - निराकार

(ii) दोपहर के पहले का समय - मध्याह्न

(iii) जानने की इच्छा - जिज्ञासा

(प्रश्न (19) - उत्तर)

स्थायी भाव और संचारी भाव में अंतर -

क्र.	स्थायी भाव	क्र.	संचारी भाव
1)	वे भाव, जो सहृदय के हृदय में स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, 'स्थायी भाव' कहलाते हैं।	1)	आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकार 'संचारी भाव' कहलाते हैं।
2)	इनकी संख्या 10 है।	2)	इनकी संख्या 33 है।
3)	ये भाव स्थायी होते हैं तथा कभी समाप्त नहीं होते।	3)	संचारी भाव अस्थायी होते हैं, ये कम समय के लिए उत्पन्न होते हैं फिर समाप्त हो जाते हैं।

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र. (२०) - उत्तर)

:- प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ :-

१) शोषकों के प्रति विद्रोह एवं शोषितों से सहानुभूति -

इस काल के कवियों ने किसानों एवं मजदूरों पर हो रहे, पूँजीपतियों के अत्याचार के विरुद्ध अपनी कलम चलाई है।

२) सामाजिक एवं आर्थिक समानता पर बल -

प्रगतिवादी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच के अंतर को समाप्त करने पर बल दिया।

३) नारी शोषण के विरुद्ध मुक्ति का स्वर -

इस काल के कवियों ने नारी को समाज में सम्मान-जनक स्थान प्रदान किया है।

:- प्रगतिवादी कवि :-

कवि	रचनाएँ
नागार्जुन	युगधारा, सतरंगे पंखों वाली
सुमित्रानंदन पंत	युगवाणी

BSE

10

+ =

पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 10 के अंक   कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र (21) - उत्तर) (अथवा)

जीवनी और आत्मकथा में अंतर -

जीवनी	आत्मकथा
1) जीवनी में लेखक किसी महापुरुष का या अन्य व्यक्ति का जीवन चरित्र प्रस्तुत करता है।	1) स्वयं के जीवन की घटनाओं का स्वयं के द्वारा लिखा गया विवरण 'आत्मकथा' कहलाती है।
2) जीवनी में विवरण पर ध्यान दिया जाता है।	2) आत्मकथा में अनुभूतियों की गहराई होती है।
3) जीवनी वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती है।	3) आत्मकथा कथात्मक शैली में लिखी जाती है।
4) जीवनी अन्य व्यक्ति की लिखी जाती है।	4) आत्मकथा स्वयं की लिखी जाती है।

B
S
E

प्रश्न क्र. (प्रश्न (22) - उत्तर)

तुलसीदास : हिन्दी साहित्याकाश के सूर्य

• दो रचनाएँ - (1) रामचरित मानस
(२) कवितावली

- भावपक्ष - तुलसीदास जी सगुणभक्तिधारा के राम भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं।

1) भक्तिभावना - तुलसीदास जी भगवान राम के अनन्य भक्त थे। भगवान राम के जीवन को उन्होंने अपने काव्य में बड़ी सुंदरता से प्रस्तुत किया है।

२) समन्वयवादी विचारधारा - तुलसीदास जी ने रामभक्त होते हुए भी सभी देवी-देवताओं की आराधना की है।

- कलापक्ष - भावपक्ष की तरह तुलसीदास जी का कलापक्ष भी अति मनोरम है।

1) छंद :- तुलसी दास जी ने अपने काव्य में मुख्य रूप से चौपाई, दोहा, कवित्त, सवैया आदि छंद प्रयोग किए।

२) रस - अलंकार :- भक्ति, श्रृंगार, वीररस, करुण रस आदि इनके प्रिय रस हैं। अनुप्रास, रूपक, उपमा आदि अलंकारों का कुशलतापूर्वक प्रयोग करने में ये सफल हुए।

3) शैली - इन्होंने अपने काव्य प्रबंध और मुक्तक शैली में लिखे।

• साहित्य में स्थान - "रामचरित मानस ने तुलसीदास जी को हिन्दी साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान दिया है। ये रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि रहे। तुलसीदास जी हिन्दी साहित्याकाश के "सूर्य" माने जाते हैं।

12

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 12 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र. (२३) - उत्तर)

वासुदेव शरण अग्रवाल -

• दो रचनाएँ - (i) उरुज्योति
(ii) मातामूमि
(iii) पृथ्वीपुत्र

• भाषा-शैली - अग्रवाल जी की भाषा सुसंस्कृत परिमार्जित, खड़ी बोली है। कहीं-कहीं मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से ~~काव्य~~ रचनाओं में दुरुहता आ गई है। इनकी रचनाओं में देशज शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

इन्होंने अपनी रचनाएँ अनेक शैलियों में लिखीं। वाक्य विन्यास और शब्द चयन उच्च कोटि का रहा। इन्होंने मुख्यतः निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया।

१) वर्णनात्मक शैली
२) गवेषणात्मक शैली
३) सूत्रात्मक शैली
४) विवरणात्मक शैली
५) भावात्मक शैली

• साहित्य में स्थान - हिन्दी साहित्य जगत के गद्य साहित्यकारों में वासुदेव शरण अग्रवाल जी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। 'मातामूमि' इनकी एक अनोखी कृति है, जिसमें मातृभूमि के प्रति प्रेम को उच्चकोटि तक पहुँचाया है, इसमें कहा गया है कि, "मातामूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या"।

B
S
E

13 [ ] + [ ] = [ ]

योग पृ. 5 पृष्ठ 13 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

(प्रश्न (२क)- उत्तर) (अथवा)

संकेत- भर रही ---------------------- ---वसंत ?

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यखंड "नवनीत" पुस्तक के "शौर्य और देशप्रेम" नामक पाठ के "वीरों का कैसा हो वसंत" से लिया गया है, जो "सुभद्राकुमारी चौहान" द्वारा रचित है।

प्रसंग - कवियित्री ने वीरो के वसंतोत्सव पर प्रकाश डाला है।

अर्थ - कवियित्री कहती हैं कि वसंत में जिस समय कोयल मधुर आवाज में गाकर खुशियाँ मनाती है तो उसी समय बाजों की आवाज पर वीर लड़ने को तैयार खड़े हैं। देश में जहाँ एक ओर खुशियाँ और उत्साह का माहौल है, वहीं दूसरी ओर सीमा पर प्रहरी हमारी रक्षा के लिए, अपनी खुशियाँ त्यागकर, अपने प्राण न्यौछावर करने को तत्पर हैं।

इस प्रकार वीर सीमा पर वसंत की खुशियाँ मना रहे हैं।

विशेष- (i) वीर रस की प्रधानता, स्थायी भाव 'उत्साह'

(ii) अनुप्रास अलंकार

(iii) वीर सैनानियों के बलिदान और देशप्रेम का वर्णन किया है।

(iv) खड़ी बोली का प्रयोग।

प्रश्न क्र.

(प्रश्न (25) - उत्तर) (अथवा)

संकेत - शास्त्रों में ----------------- हो जाता है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यखंड "नवनीत" पुस्तक के पाठ "सच्चा धर्म" नामक एकांकी से लिया गया है। इसके लेखक "सेठ गोविंददास" हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यखंड में सत्य और असत्य की व्याख्या की गई है।

व्याख्या - कवि के अनुसार, पुरुषोत्तम अपनी पत्नि से धर्म व शास्त्रों की व्याख्या करते हुए कहता है कि शास्त्रों में सत्य-असत्य का वर्णन किया गया है, जिसके अनुसार धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताया है। धर्म ही जीवन की सबसे बड़ी चीज़ है, यदि इसकी रक्षा के लिए असत्य का सहारा भी लेना पड़े तो वह अनुचित नहीं है।

धर्म की रक्षा के लिए बोला गया असत्य सत्य से भी बड़ा होता है।

विशेष - (i) खड़ी बोली का प्रयोग।
(ii) धर्म की रक्षा को ही सर्वश्रेष्ठ बताया है।

प्रश्न क्र.

(प्रश्न (26) - उत्तर)

(i) गद्यांश का शीर्षक - "परोपकार का महत्व"

(ii) स्वार्थ को त्यागकर 'परमार्थ' के लिए कार्य करना ही सच्ची मानवता है अर्थात् परोपकार ही मानवता की पहचान है।

(iii) वृक्ष अनेकों विपत्तियों को (धूप, आँधी, वर्षा आदि) सहते हुए भी मनुष्यों व जीवों को छाया, फल आदि प्रदान करते हुए, हमें परोपकार का संदेश देते हैं।

(iv) प्रस्तुत गद्यांश में "परोपकार" को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। परोपकारी होना ही सच्ची मानवता की पहचान है। नदी, वन, वृक्ष, प्रकृति आदि सभी विभिन्न रूपों में हमें परोपकार का संदेश देते हैं।

BSE

P.T.O

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

(प्रश्न (२१) - उत्तर)

:- जिलाधीश को आवेदन पत्र :-

सेवा में,

श्रीमान जिलाधीश महोदय जी,

सागर - मध्यप्रदेश

विषय : ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय जी,

सविनय विनम्र निवेदन है कि, मैं सागर शहर में संतकबीर वार्ड का निवासी हूँ। मैं कक्षा दशम का छात्र हूँ। दसवीं की बोर्ड परीक्षा दिनाँक ०१ मार्च २०१७ से प्रारंभ होने जा रही हैं। परन्तु हमारे आसपास धार्मिक कार्यक्रम होने के कारण ध्वनि विस्तारक यंत्र प्रयोग हो रहे हैं। जिससे, अधिक शोर होने के कारण मेरे अध्ययन में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है।

अतः आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि हमारे आसपास के क्षेत्र में ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगवाने की कृपा करें।

धन्यवाद

दिनाँक
19/03/2017

प्रार्थी
नाम - अ.ब.स.
निवास स्थान - संतकबीर वार्ड
सागर

B
S
E

प्रश्न क्र.

(प्रश्न (२४) - उत्तर) (अ)

: विज्ञान के बढ़ते चरण :-

रूपरेखा - (१) प्रस्तावना
(२) विज्ञान की देन
(i) कृषि क्षेत्र में
(ii) चिकित्सा क्षेत्र में
(iii) यातायात - संचार
(iv) मनोरंजन - कम्प्यूटर
(v) विद्युत क्षेत्र में
(३) विज्ञान के दुष्प्रभाव
(४) दुष्प्रभावों को कम करने के उपाय
(५) उपसंहार

> " विज्ञान मानव जीवन की अमूल्य निधि है,
> हमें इसका सदुपयोग करना चाहिए।"
>
> - ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

" विज्ञान वह चाबी है, जो प्रकृति के उपादानों के सभी रास्ते खोल देती है।"

कृपया पृष्ठ पलटें

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र. प्रस्तावना

विज्ञान के आविष्कार मनुष्य जीवन के लिए एक वरदान स्वरूप सिद्ध हुए हैं। मानव के औद्योगिक जीवन और दैनिक जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जो विज्ञान से प्रभावित न हो। विज्ञान वर्तमान समय में हमारे एक मित्र की तरह, हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

हमारे सामने अब एक प्रश्न यह भी उठता है कि विज्ञान हमारा 'मित्र' है या शत्रु'। यह इसलिए क्योंकि जितने विज्ञान से हमें लाभ प्राप्त हो रहे हैं, दूसरी ओर विज्ञान के दुष्प्रभावों से भी मानव प्रभावित है। परन्तु यह एक वरदान के रूप में सिद्ध हुआ है।

B
S
E

२) विज्ञान की देन

मानव जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं हैं, जिसमें विज्ञान ने उन्नति न की हो। विज्ञान ने निम्न क्षेत्रों में अपने कदम बढ़ाए हैं।

(i) कृषि क्षेत्र में - आज यदि विज्ञान न होता तो उन्नत और वैज्ञानिक कृषि संभव ही न थी। विज्ञान ने किसानों को टैक्टर, विभिन्न मशीनें आदि प्रदान किए हैं, जो कृषि क्षेत्र में एक वरदान स्वरूप सिद्ध हुए हैं।

रासायनिक खाद, कीटनाशक आदि विज्ञान की ही देन हैं।

प्रश्न क्र.

(ii) चिकित्सा क्षेत्र में – हम यह कह सकते हैं कि विज्ञान ने आज इतनी उन्नति कर ली है कि अब वो मनुष्यों को जीवनदान देने में सक्षम है। कैंसर, मधुमेह, थायरॉइड आदि गंभीर बीमारियों का इलाज विज्ञान द्वारा ही संभव हुआ है। 'प्लास्टिक सर्जरी' विज्ञान की एक आधुनिक देन है।

(iii) यातायात -संचार – विज्ञान द्वारा प्रदत्त यातायात के नवीन और आधुनिक साधनों ने सम्पूर्ण विश्व को एक छोटे से गाँव में बदल दिया है। आज मनुष्य जहाज, ट्रेन, बसों के उपयोग से पल भर में एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन कर सकता है।

(iv) मनोरंजन-कंप्यूटर – विज्ञान ने मनोरंजन के अनेकों साधन मनुष्यों को प्रदान किए हैं। मनुष्य अपना अतिरिक्त समय को मनोरंजन के साथ व्यतीत करना चाहता है। विज्ञान ने इस क्षेत्र में भी उन्नति की है।

'कम्प्यूटर' विज्ञान की एक अनोखी कृति है। आज विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रयोग बढ़ता जा रहा है।

(v) विद्युत क्षेत्र में – विज्ञान ने मनुष्यों को विद्युत क्षेत्र में भी अनेक साधन प्रदान किए हैं ट्यूबलाइट, पंखे, वॉशिंग मशीन आदि विज्ञान की ही देन है। विद्युत के माध्यम से ही हम आज औद्योगिक प्रगति करने में सफल हुए हैं।

प्रश्न क्र. 3) विज्ञान के दुष्प्रभाव -

वैज्ञानिकों द्वारा वर्तमान में ऐसे अनेक खतरनाक हथियारों, परमाणु बम्बों आदि का आविष्कार करना एक आम बात हो गई है। परन्तु इनके आविष्कार के कारण ही विभिन्न प्रकार की अनावश्यक और खतरनाक आतंकवादी गतिविधियों से विश्व का हर एक देश प्रभावित है। ऐसी अनेक आपदाएँ और संकट हैं जिनका प्रभाव आज बढ़ता ही जा रहा है।

4) दुष्प्रभावों को कम करने के उपाय -

वैज्ञानिक आविष्कारों से होने वाले दुष्प्रभावों को रोका तो नहीं जा सकता, केवल कम किया जा सकता है। इस क्षेत्र में मानवों की जागरूकता अनिवार्य है। रसायनों, बमों, हाथ हथियारों के उपयोग पर रोक लगाना बहुत अनिवार्य है।

(5) उपसंहार

विज्ञान से मानवों को जितने लाभ हो रहे हैं, उतनी ही हानियाँ। विज्ञान ने ऐसी अनेकों मशीनों का आविष्कार किया है जिन्होंने अनेक मजदूरों, गरीबों को बेरोजगार बना दिया है। अब औद्योगिक क्षेत्रों में मशीनों के अधिकाधिक प्रयोग के कारण लोग अपने काम-धंधे से दूर हो रहे हैं।

माध्यमिक शिक्.. 4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
विशिष्ट हिन्दी	0 0 1	हिन्दी	19 03 19

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका सरल क्रमांक

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: X 1 9 2 4 5 0 6 0

शब्दों में:

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H. S. 2019

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Smt- Sumanlata Rajak

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक .... प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

केवल यह ही नहीं लोग औद्योगिकीकरण के इस युग में अपने धर्म और ईश्वर को भी भूलने की गलती कर बैठे हैं।

परन्तु वर्तमान समय में भारत ने वैज्ञानिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। हाल ही में २६ फरवरी को भारतीय वायुसेना ने अपने १२ मिराजों से पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक कर दी। ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जो केवल विज्ञान के द्वारा ही संभव हुई हैं।

"हमें विज्ञान का सदुपयोग करना चाहिए, न कि उसका दुरुपयोग।"

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्र.

(प्रश्न क्र. (२४) - उत्तर) (ब)

राष्ट्रीय पर्व (स्वतंत्रता दिवस)

रूपरेखा

(i) प्रस्तावना
(ii) स्वतंत्रता दिवस का महत्व
(iii) यह पर्व मनाने का कारण
(iv) दिल्ली में उत्सव की धूमधाम
(v) लाल किला पर ध्वजारोहण
(vi) देशवासियों में उत्साह
(vii) विभिन्न विद्यालयों में उत्सव की धूमधाम
(viii) वीर सेनानियों को श्रद्धांजलि
(ix) उपसंहार

BSE